मोमिन काफर दो कहे, तिन की एह तफावत।
ए चोट काफरों न लगे, मोमिनों छेद निकसत।।२२ ।।

मोमिन और काफिर दो तरह के लोगों की हकीकत बताई। उनमें यह फर्क है कि मोमिन वाणी से घायल होकर संसार छोड़कर घर जाएंगे और काफिर पर कुछ असर नहीं होगा।

महामत कहे ए मोमिनों, क्यों न विचारो तुम।
कई बिध तुम वास्ते करी, क्यों भूलो इन खसम।।२३ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मेरे प्यारे मोमिनो! तुम इस बात का विचार क्यों नहीं करते कि धनी ने तुम्हें आनन्द देने के लिए अनेक तरह से तुम्हें लीला दिखाई है। फिर तुम ऐसे धनी को क्यों भूलते हो?

।। प्रकरण ।। ८ ।। चौपाई ।। ४५८ ।।

नूर नूरतजल्ला की पेहेचान

बुलाइयां निसबत जान के, देखो मेहेर हक की ए।
हाए हाए तो भी इस्क न आवत, अरवा अर्स की जे।।१ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि श्री राजजी महाराज की मेहर देखो कि वह तुम्हें अपनी अंगना जानकर बुला रहे हैं। हाय! हाय! तुम अर्श की अंगना कहलाती हो, फिर भी तुम्हें अपने धनी से मिलने की तड़प नहीं आती?

ए मेहेर भई मोमिनों पर, समझत नाहीं कोए।
सो कोई तो समझे, जो पेहेचान हक की होए।।२ ।।

यह मेहर मोमिनों के वास्ते हुई है और इसे दूसरा कोई नहीं समझ सकता। दूसरा तो तब समझे जब उसे पारब्रह्म की पहचान हो?

खावंद अर्स अजीम का, सो कहूं नेक हकीकत।
इन हक बका से मोमिन, रखते हैं निसबत।।३ ।।

धाम के धनी की थोड़ी सी हकीकत बताती हूं। इस अखण्ड परमधाम के श्री राजजी महाराज की ब्रह्मसृष्टि अंगना हैं।

बका अव्वल से अबलो, किन किया न जाहेर सुभान।
नेक कहूं सो बेवरा, ज्यों होए हक पेहेचान।।४ ।।

आज तक उस अखण्ड परमधाम को तथा पारब्रह्म अक्षरातीत श्री राजजी महाराज को किसी ने जाहिर नहीं किया, इसलिए श्री राजजी महाराज की हकीकत थोड़ी सी बताती हूं।

तबक चौदे मलकूत से, ऐसे पलथें कई पैदास।
ऐसी बुजरक कुदरत, नूरजलाल के पास।।५ ।।

बैकुण्ठ से नीचे के चौदह लोकों का जितना बड़ा ब्रह्माण्ड है, ऐसे कई ब्रह्माण्ड एक पल में पैदा करने की शक्ति अक्षर ब्रह्म की कुदरत के पास है।

ऐसे पल में पैदा करे, पल में करे फनाए।
ऐसा बल रखे कुदरत, नूरजलाल के।।६ ।।

अक्षर ब्रह्म की कुदरत की ऐसी शक्ति है कि एक पल में ऐसे कई ब्रह्माण्ड बनाकर मिटा देते हैं।

Nijanand App

इनमें कोई कायम करे, जो दिल आए चढ़त।
सो इंड सारा नूर में, जो दिल दीदों देखत।।७॥

इन ब्रह्माण्डों में कोई जो अक्षर को अच्छा लगता है, उसे अपने दिल में अखण्ड कर लेते हैं। यदि दिल से विचार कर देखो तो सारा ब्रह्माण्ड जो अखण्ड होता है वह नूर मयी हो जाता है।

कायम होत जो नूर से, सो आवे न सब्द माहें।
तो रोसनी नूरमकान की, क्यों आवे इन जुबांए।।८॥

और जो ब्रह्माण्ड अक्षर ब्रह्म के द्वारा अखण्ड होते हैं उनकी सिफत शब्दों में करना सम्भव नहीं है, तो अक्षरधाम का वर्णन इस जबान से कैसे हो सकता है?

जब थक रही जुबां इतहीं, ए जो नूरें किया ख्याल।
तो आगे जुबां क्यों कर कहे, बल सिफत नूरजलाल।।९॥

अक्षर ब्रह्म ने अपनी इच्छा से जो खेल बनाया उसका ही वर्णन करने में जब जबान थक जाती है तो अक्षर की ताकत का बयान इस जबान से कैसे हो सकता है?

ए बल नूरजलाल को, जिन की एह कुदरत।
एह जुबां ना केहे सके, बुजरक बल सिफत।।१०॥

अक्षर ब्रह्म की शक्ति भारी है, जिनकी यह कुदरत है। कुदरत के ही बल का बयान जब जबान नहीं कर सकती, तो अक्षर ब्रह्म का वर्णन कैसे सम्भव है?

सो नूर नूरजमाल के, दायम आवें दीदार।
ए जुबां अर्स अजीम की, क्यों कहे सिफत सुमार।।११॥

ऐसे अक्षर ब्रह्म नित्य श्री राजजी महाराज के दर्शन करने आते हैं। तो फिर इस जबान से अर्श अजीम की सिफत का वर्णन कैसे हो सकता है?

नूरजलाल की सिफत को, जुबां ना पोहोंचत।
तो नूरजमाल की सिफत को, क्यों कर पोहोंचे तित।।१२॥

अक्षर ब्रह्म की सिफत का वर्णन जबान नहीं कर सकती, तो पारब्रह्म अक्षरातीत की सिफत का वर्णन कैसे होगा?

जुबां थकी बल नूर के, ऐसी सिफत कमाल।
तो इत आगूं जुबां क्यों कर कहे, बल सिफत नूरजमाल।।१३॥

जब अक्षर ब्रह्म की ताकत की सिफत करने में ही जबान थक गई तो आगे अक्षरातीत की सिफत का वर्णन यह जबान कैसे करे?

जित चल न सके जबराईल, कहे मेरे पर जलत।
नूरतजल्ला की तजल्ली, ए जोत सेहे न सकत।।१४॥

जबराईल फरिश्ता कहता है कि अक्षरातीत के तेज से मेरे पर (पंख) जलते हैं और मैं उनके तेज को सहन नहीं कर सकता।

जाके नूर की ए रोसनी, ऐसी करी सिफत।
तिन का असल जो बातून, सो कैसी होसी सूरत।।१५॥

जिस अक्षर के नूर की ऐसी सिफत है तो उनका भी मूल जो पारब्रह्म अक्षरातीत है उनके असल स्वरूप का वर्णन कैसे होगा?

Nijanand App

ऐसी खूबी सोभा सुन्दर, जो सांची सूरत हक।
नामै आसिक इन का, सब पर ए बुजरक।। १६ ।।

अक्षरातीत श्री राजजी महाराज के सुन्दर स्वरूप की इस तरह की अखण्ड शोभा है। उनका नाम आशिक है और सर्वश्रेष्ठ है।

ए जो सब कहियत हैं, हक बिना कछु ए बात।
सो सब नूर की कुदरत, जो उपज फना हो जात।। १७ ।।

यहां श्री राजजी महाराज के बिना जो कुछ भी दिखाई पड़ता है, वह अक्षर की कुदरत का खेल है जो बनकर मिट जाता है।

पाइए इनसे बुजरकी, जो असल कह्या एक।
खास रूहें याकी जात हैं, ए रूहअल्ला जाने विवेक।। १८ ।।

इस चौदह लोकों के ब्रह्माण्ड से उस पारब्रह्म की जो सारे जगत के एक हैं, उनकी महानता जानी जाती है। यह ब्रह्मसृष्टियां उनकी अंगना हैं जिसके विवरण को रूह अल्लाह श्री श्यामा महारानी के तारतम ज्ञान से जाना जाता है।

आसिक तो भी एह है, और मासूक तो भी एह।
खूबी सोभा सब इनकी, प्यारा प्रेम सनेह।। १९ ।।

श्री राजजी महाराज आशिक और माशूक दोनों हैं। यह सभी खूबियां इनकी शोभा हैं और अखण्ड इश्क उन्हीं के पास है।

मेहेरबान भी एह है, दाता न कोई या बिन।
हक बंदगी सिवाए जो कछू कह्या, सो सब तले इजन।। २० ।।

सब कुछ देने वाले, मेहरबान दाता यही हैं। इनके बिना कोई दूसरा नहीं है। इनकी बन्दगी के बिना जो भी लीला है वह सब इनके हुकम से ही पैदा हुई है।

अब कहूं इन रूहन को, जो खड़ियां तले कदम।
तुम क्यों न विचारो रूहसों, ऐसा अपना खसम।। २१ ।।

श्री महामतिजी अब रूहों को जो अक्षरातीत के चरणों के तले बैठी हैं, कहती हैं, हे मोमिनो! तुम अपने ऐसे धनी को विचार करके क्यों नहीं पहचानतीं?

इन का बिछोहा सुन के, आपन रहत क्यों कर।
फिराक न आवत हमको, याद कर ऐसा घर।। २२ ।।

ऐसे धनी का वियोग (बिछोह) सुनकर हम कैसे रह रहे हैं? हमें अपने ऐसे धनी की याद, घर की याद आने पर विरह क्यों नहीं आता?

आराम इस्क इन वतन का, हक का सुन्या आपन।
अजहूं न विरहा आवत, सुन के एह वचन।। २३ ।।

श्री राजजी महाराज का आराम और इश्क जो वह घर में देते हैं, उसे सुनकर हमको विरह क्यों नहीं आता?

Nijanand App

ऐसा कदीमी वतन, ऐसा इस्क आराम।
ऐसी मेहेरबानगी गिरो को, सुख देत हैं आठों जाम।। २४ ।।

अपना अनादि अखण्ड घर तथा श्री राजजी महाराज का इश्क और अखण्ड आराम है, जो मेहरबानी करके वह रूहों को दिन-रात देते हैं।

ऐसा हक जो कादर, सब विध काम पूरन।
ए सुन इस्क न आवत, तो कैसे हम मोमिन।। २५ ।।

हम कैसी ब्रह्मसृष्टियां हैं जो अपने ऐसे समर्थ खाविंद को जो सब तरह से इच्छा पूर्ण करते हैं, बातें सुनकर इश्क नहीं आता?

ए जो सुकन हक के मैं कहे, तामें जरा न रही सक।
ए सुन के विरहा न आवत, सो ना इन घर माफक।। २६ ।।

अक्षरातीत के लिए मैंने जो कुछ शब्द कहे हैं उनमें तनिक भी संशय की गुंजाइश नहीं है। इतना सुनने के बाद भी जिनको विरह नहीं आता वह इस अखण्ड घर के योग्य नहीं हैं।

यों चाहिए रूहन को, सुनते बिछोहा पिउ।
करते याद जो हक को, तबहीं निकस जाए जिउ।। २७ ।।

ब्रह्मसृष्टियों को प्रीतम से बिछुड़ने का समाचार सुनते ही अपने धनी को यादकर के तुरन्त तन छोड़ देना चाहिए।

फिराक सुनते हक की, वजूद पकड़े क्यों इत।
जो रूह असल वतन की, ए नहीं तिन की सिफत।। २८ ।।

धनी के विरह की बात सुनकर संसार में जो तन धारण किए रखे वह अखण्ड घर की आत्मा नहीं हैं। उन्हें यह शोभा नहीं देता।

खूबी खुसाली बुजरकी, सोभा सिफत मेहेरबान।
इस्क प्रेम वतन का, कायम सुख सुभान।। २९ ।।

श्री राजजी महाराज के अखण्ड सुख, महिमा, प्रसन्नता, महानता, शोभा और धनी की सिफत और श्री राजजी महाराज के परमधाम का अखण्ड सुख मोमिनों को प्राप्त है।

कहूं प्यार कर मोमिनों, दिल दे सुनियो तुम।
अरवा क्यों न उड़ावत, समझ हक इलम।। ३० ।।

इसलिए मोमिनों को प्यार से कहती हूं, तुम भी दिल से सुनना। तारतम वाणी के ज्ञान से समझकर अपनी आत्मा को क्यों नहीं उड़ाते हो?

कुदरत से पाइयत हैं, बुजरकी कादर।
सिफत लिखी दोऊ ठौर की, आवत न काहूं नजर।। ३१ ।।

अपने ऐसे समर्थ धनी की लीला इन्हीं की कुदरत से जानी जाती है। हे मोमिनो! कुरान में अक्षरधाम और अक्षरातीत के धाम की कई तरह से सिफत लिखी है जो किसी को समझ में आती नहीं।

Nijanand App

तिन हकें मोमिन दिल को, अपना कह्या अर्स।
कह्या तुम भी उतरे अर्स से, यों दई सोभा अरस-परस।। ३२ ।।

ऐसे अक्षरातीत श्री राजजी महाराज ने मोमिनों के दिल को अपना अर्श कहा है और यह भी कहा है कि तुम भी अर्श से उतरकर खेल में आए हो। इस तरह से हमारी और श्री राजजी महाराज की अरस परस (परस्पर) की महिमा जानी गई।

ए खावंद काहूं न पाइया, खोज खोज थके सब मिल।
चौदे तबक की दुनी की, पोहोंचे ना फहम अकल।। ३३ ।।

चौदह लोकों के सभी लोग खोज-खोजकर थक गए, परन्तु किसी को भी पारब्रह्म नहीं मिले। चौदह तबकों की सपने की झूठी अक्ल उन तक नहीं पहुंचती।

सो हादी देखावत जाहेर, अर्स खुदा का जे।
चौदे तबक चारों तरफों, सेहेरग से नजीक ए।। ३४ ।।

उस अखण्ड परमधाम की पहचान श्री प्राणनाथजी ज़ाहिर कर दिखा रहे हैं। चौदह लोकों के चारों तरफ से पारब्रह्म मोमिनों को शहरग (प्राण नली) से भी नजदीक है।

हांसी करी अति बड़ी, हक आए तेहेकीक।
चौदे तबकों में नहीं, सो देखाए दिया नजीक।। ३५ ।।

श्री राजजी महाराज ने यहां आकर हमसे बहुत बड़ी हंसी की है। जिस पारब्रह्म को चौदह लोकों के स्वामी नहीं पा सके उसे हमें हमारे पास दिखा दिया।

महामत कहे हंसे हक, देख मोमिनों हाल।
आखिर बुलाए चलें वतन, करके इत खुसाल।। ३६ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि मोमिनो (सुन्दरसाथजी)! की ऐसी हालत देखकर श्री राजजी महाराज हंस रहे हैं और इस संसार में सब इच्छा पूरी करके घर ले चलने के वास्ते आए हैं।

।। प्रकरण ।। ९ ।। चौपाई ।। ४९४ ।।

जहूरनामा किताब

पढ़े तो हम हैं नहीं, ए जो दुनियां की चतुराए।
कहूं माएने हकीकत मारफत, जो ईसा रसूल फुरमाए।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि हम दुनियां की झूठी चतुराई नहीं पढ़े हैं, परन्तु हकीकत और मारफत के ईसा (श्यामा महारानी) श्री देवचन्द्रजी और रसूल मुहम्मद साहब के कहे वचनों के अनुसार इनके भेद खोलती हूं।

अव्वल बीच और अबलों, सबों ढूंढ्या बनी आदम।
एती सुध किन न परी, कहां खुदा कौन हम।। २ ।।

शुरू से लेकर आज तक संसार के लोगों ने इस पारब्रह्म की बहुत खोज की, परन्तु किसी को यह खबर नहीं हुई कि वह पारब्रह्म कौन है और हम कौन हैं?

Nijanand App